© 2020 | International Journal of Scientific Research in Science and Technology
IJSRST | Volume 7 | Issue 3 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिरूचि का समीक्षात्मक अध्ययन

श्वेता तिवारी
(शिक्षाशास्त्र)
शिक्षक–शिक्षा संकाय
नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय
प्रयागराज

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र प्रयागराज जिले के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिरूचि का समीक्षात्मक अध्ययन पर आधारित है। प्रस्तुत अध्ययन में समस्या की प्रकृति अनुसार वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत ''सर्वेक्षण विधि'' का प्रयोग किया गया है। जिसके अन्तर्गत प्रयागराज जनपद में स्थित शहरी एवं ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् दात्र–छात्राओं को जनसंख्या माना है। जिसमें 50–50 विद्यार्थियों जिनकी अभिरूचि मापने हेतु डॉ0 एस0पी0 कुलश्रेष्ठ की प्रमाणीकृत प्रश्नावली उपकरण का प्रयोग किया गया है एवं इनके आँकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात का प्रयोग किया गया है। अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर पाया गया कि माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिरूचि में सार्थक अन्तर नहीं है।

मूल शब्दः प्रयागराज जिला, माध्यमिक विद्यालय, शहरी एवं ग्रामीण, विद्यार्थियों की अभिरूचि समीक्षात्मक अध्ययन।

शिक्षा वह जननी है जो शिक्षा को जन्म देती है और निरन्तर गतिशील रहकर नव निर्मित शिक्षा का निर्माण करती रहती है और इस प्रकार जीवन पर्यन्त चलती रहती है जो मानव का सम्पूर्ण विकास करके उसके व्यक्तिगत उन्नति का मार्ग प्रशस्त करती है वह घर पर हर

जगह चाहे वह गांव हो या शहर नये–नये अनुभव प्राप्त कराती है क्योंकि अनुभव द्वारा व्यवहार में परिवर्तन ही सीखना है और **सीखना** ही शिक्षा है।

प्राचीन काल में शिक्षा का क्षेत्र बहुत ही सीमित था। छात्रों की आवश्यकताओं, परिस्थितियों, क्षमताओं, रूचियों का शिक्षा क्रिया में कोई स्थान नहीं था लेकिन शिक्षा में मनोविज्ञान सम्मिलित होने से बालकों को समझने तथा शैक्षिक समस्याओं का समाधान करने में अधिक प्रयास होने लगे शिक्षा को हमेशा से ही राष्ट्र तथा समाज की प्रगति का एक महत्वपूर्ण साधन माना जाता है।

शिक्षा की दृष्टि से माध्यमिक स्तर की शिक्षा का बहुत महत्व है, क्येांकि इसमें बालक–बालिका के बीच सिर्फ विकास या दिमाग का ही नहीं बल्कि प्रारम्भिक वातावरण, कौशल, सीखने की क्षमता, बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता भी आवश्यक है जिससे वे अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सके। भारत को एक मजबूत राष्ट्र बनाने की नींव शिक्षा की गुणवत्ता पर निर्भर करता है, ग्रामीण एवं शहरी जीवन दो परस्पर विरोधी चित्रों को प्रस्तुत करता है। दोनों ही के अपने–अपने नकारात्मक एवं सकारात्मक पहलू हैं जो व्यक्ति विशेष पर निर्भर करता है। चूंकि माध्यमिक स्तर में बालक–बालिका के मानसिक विकास में तेजी से सोचने–समझने की शक्ति, अलग–अलग क्षेत्रों में अभिरूचि दिखाना और उसी प्रकार अपने लक्ष्य, उद्देश्यों का निर्धारण करना, जैसी प्रक्रिया की शुरूआत हो जाती है। ग्रामीण और शहरी दोनों वातावरण में विद्यार्थियों के व्यवहारिक, मानसिक, सामाजिक विकास में परिवार, समाज एवं विद्यालय का प्रमुख स्थान होता है। वो क्या और कैसे करेगा यह सब विद्यार्थियों की अभिरूचियों द्वारा ही निर्धारित होता है।

गिलफोर्ड के शब्दों में – ''रूचि किसी क्रिया वस्तु या व्यक्ति या ध्यान देने, उसके द्वारा आकर्षित होने उसे पसन्द करने तथा उससे संतुष्टि पाने की प्रवृत्ति है'' क्योंकि शैक्षिक तथा व्यवसायिक निर्देशन व परामर्श के क्षेत्र में अभिरूचि का महत्वपूर्ण स्थान होता है। बालक–बालिका के स्वभाव एवं विभिन्न पहलुओं में पहला स्थान अभिरूचि का होता है कई विद्यार्थी प्रशासनिक अधिकारी बनना चाहते हैं तो कुछ डाक्टर, वकील, जज, इंजीनियर, व्यवसायी एवं कुछ उद्यमी बनने की इच्छा रखते हैं। किसी बालक–बालिका को इतिहास तो

किसी को गणित, किसी को विज्ञान और किसी को हिन्दी विषय अच्छा लगता है इसलिए व्यक्ति के कई या अनेक लक्ष्यों के विभिन्नताओं में अन्तर अभिरूचि को प्रकट करता है।

रैमर्स, गेज व रूमेल के अनुसार रूचियां वास्तव में सुखान्त व दुखान्त भावनाओं, पसन्द या नापसन्द के व्यवहार के प्रति आकर्षण व प्रतिकर्षण से परिलक्षित होती है।

अतः अभिरूचि ही विद्यार्थियों को उत्साहित तथा प्रेरणा पूर्ण करते हुए शिक्षा को रूचिकर बनाती है जिससे वे उस विषय को मन से पढ़ते हैं और शिक्षा के प्रति उत्साहित और लक्ष्य की ओर अग्रसर रहते हैं। लेकिन जब इसके विपरीत उनकी अभिरूचि पढ़ाई में नहीं होती वे शिक्षा के प्रति जागयक नहीं होते, फलस्वरूप उन्हें कक्षा उबाऊ लगती है। अतः अभिरूचि विद्यार्थियों के विकास को सहज, सरल व स्वाभाविक बनाने में महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

ग्रामीण एवं शहरी स्तर के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अभिरूचि का समीक्षात्मक अध्ययन पर कुछ पूर्व शोध किये गये जिनसे ज्ञात होता है कि शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिरूचियों में सार्थक अन्तर होता है। जैसे कि **तिवारी अनूप (2007)** ने अपने अध्ययन में ग्रामीण क्षेत्र के इण्टरमीडिएट के छात्रों में व्यावसायिक अभिरूचि का अध्ययन किया जिसमें निष्कर्षतः ग्रामीण क्षेत्र के इण्टरमीडिएट के छात्रों की नौकरी एवं व्यापार की अभिरूचि में सार्थक अन्तर पाया गया।

भोजकर एवं मेहता (2007) ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का व्यावसायिक रूचि का अध्ययन किया और इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि सभी लड़के एवं लड़कियों ने वाह्य प्रयोगात्मक और सामाजिक सेवा को वरीयता दी। कला की छात्राओं की तुलना में विज्ञान की छात्राओं ने समाज सेवा में विशेष रूचि ली। व्यावसायिक रूचि में कला एवं विज्ञान के क्षेत्रों में अन्तर पाया गया।

सुब्रह्मण्यम पी0आर0 (2009) ने शारीरिक शिक्षा में अधिगम एवं व्यस्तता पर रूचि का अभिप्रेरणा प्रभाव का अध्ययन किया। इस समीक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों की व्यस्तता और अधिक पर रूचि की शक्ति को उजागर करना है। सामान्य शिक्षा एवं शारीरिक शिक्षा में रूचि आधारित अनुसंधान से स्पष्ट है कि पारिस्थितिक रूचि से बच्चों में व्यक्तिगत रूचि और भविष्यगामी इच्छा जागृत होती है। **सिंह, ज्ञान (2011)** ने माध्यमिक स्तर के हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम के

छात्र–छात्राओं के वैज्ञानिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन किया और पाया कि माध्यमिक सतर के हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के वैज्ञानिक रूप में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। **सरोज, प्यारे लाल (2017)** ने जौनपुर जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् दात्र–छात्राओं के विज्ञान विषय के प्रति रूचि एवं शैक्षिक सम्प्राप्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया। निष्कर्ष में पाया कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में विज्ञान विशय के प्रति रूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात दोनों में समानता पाय गयी लेकिन शहरी छात्रों में विज्ञान विषय के प्रति रूचि ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा उच्च पायी गयी।

समस्या कथन

'माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिरूचि का समीक्षात्मक अध्ययन।''

शोध उद्देश्य –

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया हैः–

1. शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अभिरूचि का अध्ययन करना।
2. शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की अभिरूचि का अध्ययन करना।
3. शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की अभिरूचि का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएं –

प्रस्तुत अध्ययन में उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया हैः

1. शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अभिरूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की अभिरूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत् दात्राओं की अभिरूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध प्रविधि –

प्रस्तुत अध्ययन में आवश्यक प्रदत्तों के संकलन के लिए बालक–बालिका की अभिरूचि मापने हेतु डॉ0 एस0पी0 कुलश्रेष्ठ, डी0ए0वी0 (पी0जी0) कालेज, देहरादून की प्रमाणीकृत प्रश्नावली उपकरण का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति के अनुसार वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत ''सर्वेक्षण विधि'' का प्रयोग किया गया हे। जिसमें प्रयागराज जनपद में स्थित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं को जनसंख्या माना गया है। अध्ययन उद्देश्यों के लिए शहरी एवं ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत 50–50 विद्यार्थियों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात, का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्या –

सारणी–1 – शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अभिरूचि में अन्तर की सार्थकता की जांच।

TABLE-1 (URBAN) शहरी

Sr. No.	Interest Area	(N)	Efx	Mean	SD	SEO	T-Value	सार्थकता स्तर एवं सारणी मान	परिणाम
1	AG	50	100	1	0.70	10	1.94	0.05 (1.98)	0.05 सार्थकता स्तर पर असार्थक
2	CO	50	400	4	2.82	40			
3	FA	50	300	3	212	30			
4	HO	50	200	2	141	20			
5	HU	50	500	5	3.53	50			
6	SC	50	400	4	282	40			
7	TE	50	300	3	2.12	30			

सारणी–2 – ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अभिरूचि में अन्तर की सार्थकता की जांच।

TABLE-1 (URBAN) ग्रामीण

Sr. No.	Interest Area	(N)	Efx	Mean	SD	SEO	T-Value	सार्थकता स्तर एवं सारणी	परिणाम

								मान	
1	AG	50	200	2	1.41	20	1.94	0.05 (1.98)	0.05 सार्थकता स्तर पर असार्थक
2	CO	50	300	3	2.12	30			
3	FA	50	400	4	2.82	40			
4	HO	50	300	3	2.12	30			
5	HU	50	100	1	0.70	10			
6	SC	50	500	5	3.53	50			
7	TE	50	300	3	2.12	30			

विश्लेषण एवं व्याख्या –

सारणी संख्या–1 से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत शहरी विद्यार्थियों की अभिरूचि का मध्यमान, मानक विचलन की गणना उपरान्त t-value का मान 1.94 प्राप्त हुआ जो –05 सार्थकता स्तर पर तालिका मान 1.98 से कम है अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। अतः माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् शहरी विद्यार्थियों की अभिरूचि में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या–2 से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिरूचि का मध्यमान, मानक विचलन की गणना उपरान्त t-value का मान 1.94 प्राप्त हुआ जो . 05 सार्थकता स्तर पर तालिकामान 1.98 से कम है अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। अतः माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिरूचि में सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए –

– माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिरूचि में सार्थक अन्तर नहीं है जिनमें कुछ शहरी विद्यार्थी (AG) में कम तथा ग्रामीण विद्यार्थी AG में थोड़ा ज्यादा, (CO) में शहरी विद्यार्थी ज्यादा तो ग्रामीण विद्यार्थी कम रूचि रखते हैं, (FA) में शहरी विद्यार्थी कम तो ग्रामीण विद्यार्थी ज्यादा, (HO) में शहरी विद्यार्थी ज्यादा तथा ग्रामीण विद्यार्थी कम, (SC) में शहरी विद्यार्थी ज्यादा था ग्रामीण विद्यार्थी कम (TE) में शहरी तथा ग्रामीण दोनों की रूचि समान पायी गयी।

– माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिरूचि में शहरी विद्यार्थियों की (HU) विषय में अधिक अभिरूचि पायी गयी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों की (SC) विषय में अधिक अभिरूचि पायी गयी।

अतः निश्कर्षतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिरूचि में अन्तर नहीं होता है चूंकि इस स्तर पर विद्यार्थियों का बौद्धिक स्तर चरम सीमा पर होता है और अपने लक्ष्य को पाने के लिए हर क्षेत्र के प्रत्येक विषय पर रूचि प्रदर्शित करते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. पाण्डेय, के0पी0 (2005), उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

[2]. अरूण कुमार सिंह (2006), शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन पब्लिशर्स, पटना।

[3]. गुप्ता, एस0पी0 (2006), सांख्यिकीय विधियां, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

[4]. राय पारसनाथ (2004), अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, प्रकाशन।

[5]. सिंह अरूण कुमार (2001) ''मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां'' चतुर्थ संस्करण, मोती लाल नगर बनारसी दास, दिल्ली।

[6]. मंगल, एस0के0 एवं मंगल श्रीमती शुभ्रा (2005), विद्यार्थी विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, लायक बुक डिपो।

[7]. दबे शैली (2007), ''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्रति अभिवृत्त एवं अभिरूचि का अध्ययन'' एम0एम0 लघु शोध, राजस्थान।